बहुत दिनों बाद कोई नेता इतना चला

वहां क्लिक करें

राहुल वर्मा | फेलो, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च

इस यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा करके कांग्रेस ने अपनी सांगठनिक क्षमता का भी संकेत दिया है। साथ ही, इसने पार्टी के अंदर नेतृत्व का सवाल कमोबेश खत्म कर दिया है।

करीब 3,500 किलोमीटर की राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' सोमवार को श्रीनगर में पूरी हो गई। अब सबके मन में यही सवाल है कि उनकी इस यात्रा के तात्कालिक और दीर्घकालिक क्या-क्या प्रभाव पड़ेंगे? कहने को तो कन्याकुमारी (तमिलनाडु) से श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) तक की इस दूरी को करीब पांच महीने में नापा गया है, लेकिन दक्षिण के राज्यों को राहुल गांधी ने जितना वक्त दिया, उतना उत्तर, विशेषकर हिंदी पट्टी के सूबों को नहीं दिया। फिर भी, किसी नेता ने बहुत दिनों के बाद इस तरह पांव-पैदल दक्षिण से उत्तर तक का सफर तय किया है, जिसके लिए निस्संदेह राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी को बधाई दी जानी चाहिए।

इस यात्रा में कई जगहों पर संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) के घटक दलों के नेता शामिल हुए और राहुल गांधी के साथ कदम से कदम मिलाया, लेकिन ज्यादातर विपक्षी पार्टियों ने महज शुभकामनाएं भेजकर अपनी भागीदारी पूरी की। यहां तक कि सोमवार को श्रीनगर में समापन समारोह में भी 20-21 दलों को न्योता भेजा गया था, लेकिन द्रमुक, नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी, सीपीआई जैसी आठ-दस पार्टियों के नेता ही इसमें शामिल हुए, राजद, जद (यू), सपा, तृणमूल जैसे तमाम दलों ने इससे पूरी तरह से दूरी बरती। देखा जाए, तो विपक्ष को एकजुट न कर पाना इस यात्रा की एक कमजोरी रही है।

फिर भी, आने वाले समय में भारत जोड़ो यात्रा का भारतीय राजनीति पर विशेष प्रभाव रहेगा। पहला असर तो यही है कि इस यात्रा ने राहुल गांधी और कांग्रेस की लोकप्रियता बढ़ाई है। लोकप्रियता में हुई इस वृद्धि को इस रूप में भी देखना चाहिए कि साल 2019 के बाद से आम मतदाताओं की नजरों में कांग्रेस और राहुल गांधी, दोनों का कद घटा था। इसलिए, जो इजाफा अभी दिख रहा है, वह उनकी लोकप्रियता को मूलतः 2019 के स्तर पर ले जाता दिख रहा है। सी-वोटर का हालिया सर्वे भी इस बात की पुष्टि करता है।

हां, इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत जोड़ो यात्रा से राहुल गांधी की निजी छवि सुधरी है। पहले उनके बारे में आम धारणा यही थी कि वह गंभीर नेता नहीं हैं और लगातार मुद्दों से भटकते रहते हैं। यहां तक कि अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए भी वह मुश्किल से समय निकाल पाते हैं। इस बात को जोर-शोर से प्रचारित किया जाता था। मगर इस यात्रा ने उन्हें इस धारणा को बदलने का मौका दिया, जिसमें वह सफल हुए। आम लोगों ने यही देखा कि पिछले पांच महीनों से राहुल सड़कों पर हैं और उनकी यह क्षमता लोगों को प्रभावित कर रही है।

इस यात्रा का एक बड़ा असर कांग्रेस पर भी पड़ा है। बीते दो-तीन वर्षों से वह पार्टी काफी संघर्ष कर रही थी। न सिर्फ चुनावी-नतीजों के मोर्चे पर, बल्कि पार्टी नेतृत्व के मामले में भी तमाम तरह की खींचतान दिख रही थी। कई वरिष्ठ नेता पार्टी छोड़कर दूसरे दलों का दामन थाम रहे थे। पार्टी की वैचारिक नीतियां सुदृढ़ नहीं दिख रही थीं। मगर अब वैचारिक रूप से साफगोई दिखी है, यह पहली बार हो रहा है। राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी को लेकर अपने विचार खुलकर साझा किए हैं।

इस यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा करके कांग्रेस ने अपनी सांगठनिक क्षमता का भी संकेत दिया है। इसने पार्टी के अंदर नेतृत्व का सवाल कमोबेश खत्म कर दिया है। राहुल गांधी एक मजबूत नेता के तौर पर उभरे हैं, और चूंकि संगठन की बागडोर मल्लिकार्जुन खड़गे के पास है, इसलिए अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आने वाले दिनों में नेतृत्व के मोर्चे पर पार्टी किस तरह के रुख अपनाएगी।

रही बात चुनावी-नतीजों की, तो इसका आकलन अभी शेष है, लेकिन कांग्रेस ने खुद ही कहा था कि इसे चुनाव से जुड़ी यात्रा न मानी जाए। यह यात्रा तमिलनाडु से शुरू हुई थी और कुल 12 राज्यों से गुजरी है। इनमें कर्नाटक वह पहला बड़ा सूबा है, जहां संभवतः मई में विधानसभा चुनाव होंगे। वहां बेशक पार्टी को इस यात्रा से सीधा लाभ न हो, पर इसका परोक्ष फायदा उसे मिल सकता है। चूंकि पार्टी में वैचारिकता, सांगठनिक व नेतृत्व से जुड़े मुद्दों पर स्पष्टता है, तो कुछ मतदाता इसकी तरफ आकर्षित हो सकते हैं। हालांकि, यह भी तभी संभव होगा, जब कांग्रेस इस ऊर्जा को आगे भी कायम रखने में सफल होगी, जो उसने इस यात्रा से अर्जित की है। संभव हो, तो इस तरह की और यात्राएं करके वह जनता के बीच अपनी योजनाएं लेकर जाए। इससे उसको फायदा मिल सकता है।

जनता से जिस भाषा, शब्द अथवा संकेत में संवाद होना चाहिए, उसका अभाव राहुल गांधी में हालांकि अब भी दिख रहा है। जैसे, जब वह कहते हैं, 'मैंने राहुल गांधी को मार दिया है', तो इन शब्दों का मर्म समझना जनता के लिए बहुत आसान नहीं होता। जाहिर है, जनता के बीच अपनी बात रखने के तौर-तरीकों पर राहुल गांधी को अभी और मेहनत करनी होगी। इससे आम जनता में उनकी छवि और निखरेगी, जो न सिर्फ उनके, बल्कि कांग्रेस के हित में भी है।

एक तर्क यह दिया जा रहा है कि 2024 के आम चुनाव में कांग्रेस के लिए यह यात्रा फायदेमंद हो सकती है। फिलहाल इसका ठीक-ठीक आकलन नहीं किया जा सकता, लेकिन यह सब कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि कांग्रेस इस साल कितने विधानसभा चुनाव पूरे दमखम से लड़ती है। अगर आसन्न विधानसभा चुनाव वाले कर्नाटक, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना जैसे राज्यों में से दो-तीन में भी वह सरकार बना ले गई, तो 2024 में विपक्ष की धुरी के रूप में उभरने की उसकी दावेदारी मजबूत हो जाएगी। तभी भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकता के नारे की स्वीकार्यता भी बढ़ेगी। हालांकि, इसके लिए पार्टी को आत्म-मुग्धता से बचना होगा और विपक्षी दलों के साथ होने वाले संभावित गठबंधन में खुद को सबसे ऊपर समझने की भूल नहीं करनी होगी।

इसी तरह, बतौर मजबूत नेता उभरे राहुल गांधी की दखल सांगठनिक फैसले में एक हद से ज्यादा न बढ़े, तभी उनके लिए अच्छा होगा। कुल मिलाकर, समर अभी शेष जरूर है, लेकिन राहुल गांधी ने एक सधी हुई शुरुआत की है, जिसका फायदा आने वाले वर्षों में कांग्रेस को मिल सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)